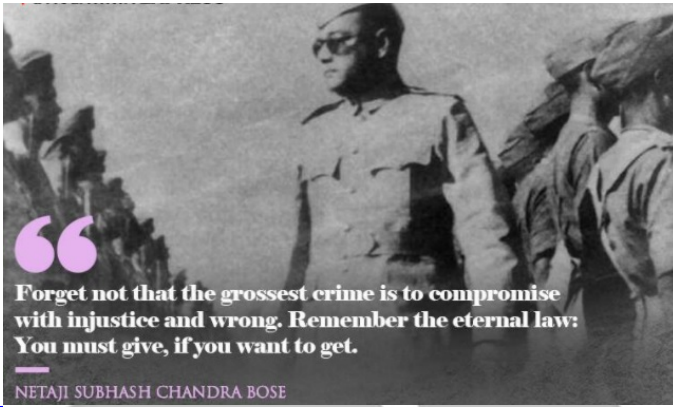


## पराक्रम दविस: नेताजी सुभाष चंद्र बोस जयंती

### चर्चा में क्यों?

केंद्र सरकार ने नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती को 'पराक्रम दविस' के रूप में मनाने का नरिणय लया है, यह परतविरष 23 जनवरी को मनाई जाती है ।

- सुभाष चंद्र बोस की वरषगाँठ को चहिनति करने के लयि वरष भर के कारयकरमों की योजना बनाने हेतु परधानमंत्री की अध्यक्षता में एक उच्च-स्तरीय समतिभी गठति की गई है ।
- हाल ही में भारत सरकार ने आपदा परबंधन के कषेत्र में व्यक्तियों और संस्थानों द्वारा कयि गए उत्कृष्ट कार्यों को मान्यता देने हेतु 'सुभाष चंद्र बोस आपदा परबंधन पुरस्कार' की स्थापना की गई है ।



### प्रमुख बदि

#### जन्म

- सुभाष चंद्र बोस का जन्म 23 जनवरी, 1897 को उड़ीसा के कटक शहर में हुआ था । उनकी माता का नाम प्रभावती दत्त बोस और पति का नाम जानकीनाथ बोस था ।

#### परचिय

- वरष 1919 में बोस ने भारतीय सविलि सेवा (ICS) परीक्षा पास की, हालाँकि कुछ समय बाद उन्होंने अपने पद से इस्तीफा दे दिया ।
- वे स्वामी वविकानंद की शकिषाओं से अत्यधिक प्रभावति थे और उन्हें अपना आध्यात्मकि गुरु मानते थे ।
- उनके राजनीतिक गुरु चतिरंजन दास थे ।

#### कॉन्ग्रेस के साथ संबंध

- उन्होंने बनिा शरत स्वराज (Unqualified Swaraj) अरथात् स्वतंत्रता का समर्थन कया और मोतीलाल नेहरू रपौरट का वरिध कया जिसमें भारत के लयि डोमनियिन (अधराज्य) के दर्जे की बात कही गई थी ।
- उन्होंने वरष 1930 के नमक सत्याग्रह में सक्रयि रूप से भाग लया और वरष 1931 में सवनिय अवज्जा आंदोलन के नलिबन तथा गांधी-इरवनि समझौते पर हस्ताक्षर करने का वरिध कया ।
- वरष 1930 के दशक में वह जवाहरलाल नेहरू और एम.एन. रॉय के साथ कॉन्ग्रेस की वाम राजनीति में संलग्न रहे ।
- बोस ने वरष 1938 में हरपिरा में कॉन्ग्रेस के अध्यक्ष का चुनाव जीता ।
- इसके पश्चात् वरष 1939 में उन्होंने त्रपिरी में गांधी जी द्वारा समर्थति उम्मीदवार पट्टाभि सीतारमैया के वरिद्ध पुनः अध्यक्ष पद का चुनाव

जीता।

- गांधी जी के साथ वैचारिक मतभेद के कारण, बोस ने कॉंग्रेस अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे दिया और कॉंग्रेस से अलग हो गए। उनकी जगह राजेंद्र प्रसाद को नियुक्त किया गया था।
- कॉंग्रेस से अलग होकर उन्होंने 'द फॉरवर्ड ब्लॉक' नाम से एक नया दल बनाया। इसके गठन का उद्देश्य अपने गृह राज्य बंगाल में वाम राजनीति के आधार को और अधिक मज़बूत करना था।

### भारतीय राष्ट्रीय सेना

- जुलाई 1943 में वे जर्मनी से जापान-नियंत्रित सिंगापूर पहुँचे, जहाँ उन्होंने अपना प्रसिद्ध नारा 'दिल्ली चलो' जारी किया और 21 अक्टूबर, 1943 को 'आज़ाद हिंदी सरकार' तथा 'भारतीय राष्ट्रीय सेना' के गठन की घोषणा की।
- भारतीय राष्ट्रीय सेना का गठन पहली बार मोहन सहि और जापानी मेजर इवाची फुजिवारा (Iwaichi Fujiwara) के नेतृत्व में किया गया था तथा इसमें मलायन (वर्तमान मलेशिया) अभियान के दौरान सिंगापूर में जापान द्वारा कैद किये गए ब्रिटिश-भारतीय सेना के युद्ध बंदियों को शामिल किया गया था।
- साथ ही इसमें सिंगापूर की जेल में बंद भारतीय कैदी और दक्षिण-पूर्व एशिया के भारतीय नागरिक भी शामिल थे। इसकी सैन्य संख्या बढ़कर 50,000 हो गई थी।
- INA ने वर्ष 1944 में इम्फाल और बर्मा में भारत की सीमा के भीतर मत्ति देशों की सेनाओं का मुकाबला किया।
- नवंबर 1945 में ब्रिटिश सरकार द्वारा INA के सदस्यों पर मुकदमा चलाए जाने के तुरंत बाद पूरे देश में बड़े पैमाने पर प्रदर्शन हुए।

### स्रोत: हदुस्तान टाइम्स

PDF Reference URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/parakram-diwasi-netaji-subhash-chandra-bose-jayanti>

